"उद्धार"

- अधिआतम करम करे दिन - राती । निरमल जोत निरंतर जाती । सबद रसाल रसन रस रसना - बेण रसाल वजाइआ

अर्थ:- वह मनुष्य दिन - रात वही कर्म करता है जो उसकी जिंद को परमात्मा के साथ जोड़े रखते हैं, वह परमात्मा की पवित्र ज्योति को हर जगह एक रस पहचान लेता है । सब रसों के श्रोत गुरु - शब्द को वह अपने हृदय में बसाता है । उसकी जीभ महान श्रेष्ठ रस नाम में रसी रहती है । वह अपने अंदर आत्मिक आनंद की, मानो एक रसीली बाँसुरी बजाता है ।

बेण रसाल वजावे सोई । जा की त्रिभवण सोझी होई ।
नानक बूझहु इह बिध गुरमत - हर राम नाम लिव लाइआ ।

अर्थः- पर यह रसीली बाँसुरी वही मनुष्य बजा सकता है जिसको तीन भवनों में व्यापक परमात्मा की सूझ पड़ जाती है । हे नानक ! तू भी गुरु की मति ले के यह सलीका सीख ले । जिस किसी ने भी गुरु की मति ली है उसकी तवज्जो परमात्मा के नाम में जुड़ी रहती है ।

ऐसे जन विरले संसारे । गुर सबद वीचारह रहह निरारे ।
आप तरह संगत कुल तारह - तिन सफल जनम जग आइआ ।

अर्थः- जगत में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो गुरु के शब्द को अपनी तवज्जो में टिकाते हैं और दुनियां में विचरते हुए भी माया के मोह से निर्लिप रहते हैं । वह संसार - समुंदर से खुद पार लांघ जाते हैं, अपनी कुलों को और उनको भी पार लंघा लेते हैं जो उनकी संगति करते हैं । जगत में ऐसे लोगों का आना लाभदायक है ।

घर दर मंदर जाणे सोई । जिस पूरे गुर ते सोझी होई ।
काइआ गढ़ महल महली प्रभ साचा - सच साचा तखत रचाइआ ।

अर्थः- वही व्यक्ति परमात्मा का घर परमात्मा का दर परमात्मा का महल पहचान लेता है जिसको पूरे गुरु से ऊँची समझ मिलती है । उसको समझ आ जाती है कि ये शरीर परमात्मा के किले हैं महल हैं । वह महलों

का मालिक प्रभु सदा - स्थिर रहने वाला है मनुष्य का शरीर उसने अपने बैठने के लिए तख़्त बनाया हुआ है । (1-1039)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"